अरविन्द घोष
(Aurbeindo Ghosh)

* परिचय
* राजनीतिक दर्शन
* आध्यात्मिक नियतिवाद
* आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की धारणा

परिचय श्री अरविन्द भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। अरविन्द की प्रतिभा बहुमुखी थी। वे कवि, तत्वशास्त्री, मनीषी, देशभक्त, बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में शिक्षित समाज पर गहरा प्रभाव डाला। उनकी रचनाओं में समस्त मानवता का अमर संदेश निहित है। रोमा रोलां अरविन्द को एशिया की प्रतिभा तथा यूरोप की प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट समन्वय मानते थे।

अरविन्द घोष एक योगी एवं दार्शनिक थे। 15 अगस्त 1972 को कलकत्ता में जन्मे थे। उनके पिता एक डाक्टर थे। इन्होंने युवावस्था में स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्तिकारी के रूप में भाग लिया किंतु बाद में वह एक योगी बन गये और इन्होंने पांडिचेरी में एक आश्रम स्थापित किया।

श्री अरविन्द का राजनीतिक दर्शन

बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक राजनीतिक दार्शनिक थे। उनके विचार दर्शन का उल्लेख इस प्रकार है -

* **भारतीय आध्यात्मवाद और यूरोपियन भौतिकवाद के बीच समन्वय:**

श्री अरविन्द को पाश्चात्य जगत तथा भारत और अन्य पूर्वी देशों, दोनों के ही दर्शन, साहित्य तथा जीवन का भली-भांति ज्ञान था। उनका विचार था कि बौद्धिक तथा राजनीतिक क्रियाकलापों के क्षेत्र में भारतीयों की अनेक असफलतायें रही हैं, लेकिन भारतीय प्रतिभा की उच्चतम अभिव्यक्ति वेदान्ती ऋषियों तथा बुद्ध की शिक्षाओं के रूप में हुई है। वस्तुतः न तो आत्मा का निषेध किया जाना चाहिए और न ही पदार्थ का। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए एक ऐसे दर्शन की सृष्टि की जानी चाहिए जिसमें पदार्थ तथा आत्मा दोनों के ही महत्व को स्वीकार किया जाय। इस प्रकार उन्होंने भारतीय दर्शन और यूरोपियन दर्शन, आध्यात्मिकता और भौतिकवाद के बीच समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। रोमा रोलां ने श्री अरविन्द को एशिया तथा यूरोप की प्रतिभा का समन्वय कहा है।

आध्यात्मिक नियतिवाद या दैवी न्यायवाद

कार्ल मार्क्स ने जिस प्रकार इतिहास की आर्थिक व्याख्या प्रस्तुत की, उसी प्रकार अरविन्द ने मानवीय इतिहास के प्रसंग में आध्यात्मिक नियतिवाद या दैवी न्यायवाद के सिद्धान्त का

प्रतिपादन किया। उनका कहना था कि इतिहास ईश्वर की क्रमिक अभिव्यक्ति है और इसके कुल घटनाओं में ईश्वरीय शक्ति ही काम कर रही है। अरविन्द भारत को परमात्मा की शक्ति का प्रतीक मानते थे और कहा कि भारत का गौरवमय पुनः-उत्थान ही अनिवार्य है। उन्होंने बतलाया कि भारत में ब्रिटिश शासन और ब्रिटिश शासन द्वारा भारतीय जनता का दमन, उत्पीड़न और अपमान ईश्वरीय योजना का ही अंग था। ईश्वर की इच्छा है कि भारत स्वयं अपने लिए स्वाधीनता प्राप्त करे और समस्त विश्व को कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ाये। अरविन्द का यह दैवी न्यायवाद भगवत् गीता के विचारों तथा जर्मन आदर्शवाद के समन्वय का प्रतीक है। इसी को हीगल ने 'इतिहास का औचित्य' कहा है। हीगल ने कहा था कि विश्व इतिहास के सिकन्दर, सीजर, नेपोलियन आदि पुरुषों ने अचेतन रूप से दैवी योजना में योगदान किया। गीता के अनुसार महापुरुष ईश्वर का विभूति रूप विशिष्ट अंश होता है। यह वास्तविक कर्ता नहीं होता।

आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की धारणा
(श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद का सिद्धान्त)

श्री अरविन्द भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। श्री अरविन्द की सम्पूर्ण राजनीतिक विचारधारा में यदि कोई बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है तो वह उनका राष्ट्रवाद का सिद्धान्त या आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की धारणा ही है। उनकी आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की धारणा दैवी नियतिवाद के साथ जुड़ी हुई है। अरविन्द ने राष्ट्रवाद का प्रतिपादन एक आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक धारणा के रूप में किया।

अरविन्द का मन राष्ट्र के प्रति बहुत अधिक संवेदनशील था। उन्होंने वन्दे मातरम के माध्यम से कहा था कि एक राष्ट्र के सुन्दर स्वस्थ तथा योग्य जीवन के लिए स्वतंत्रता प्रथम आवश्यकता है। श्री अरविन्द राष्ट्रवाद को राष्ट्र और नागरिक दोनों के लिए वरदान मानते थे। उनका राष्ट्रवाद विध्वंसक उग्रवाद की भावना से सर्वथा मुक्त था। उनका राष्ट्रवाद परतंत्रता की अपेक्षा मृत्यु को अधिक पसन्द करता था। उनका दृष्टिकोण था कि भारत स्वतंत्रता के लिए सर्वथा उपयुक्त है। वे मानते थे कि स्वशासन के बीच, स्वतंत्रता या परतंत्रता के बीच किसी एक को चुनने का विकल्प नहीं खोजना है बल्कि स्वतंत्रता अथवा मृत्यु में से एक को चुनना है।

राष्ट्र क्या है? हमारी मातृभूमि क्या है? यह भूखण्ड नहीं है, वाक्विलास नहीं है और न मन की कोरी कल्पना है। वह महाशक्ति है जो राष्ट्र के निर्माण करने वाली जनता की सामूहिक शक्तियों का संगम है। श्री अरविन्द के अनुसार भारत माँ की स्वतंत्रता के प्रयत्न में कोई रुकावट नहीं हो सकती। हमारा केवल एक लक्ष्य है और वह है पूर्ण और अखण्ड स्वतंत्रता।

17.0

श्री अरविन्द के अनुसार, राष्ट्रीयता एक धर्म है जो ईश्वरीय देन है। राष्ट्रीयता एक विश्वास है जिसके अनुसार हमें जीवित रहना है। राष्ट्रवादी बनने के लिए धार्मिक भावना का पालन करना होगा। उनका कहना था कि हमें याद रखना चाहिए कि हम निमित्त मात्र हैं, भगवान के साधनमात्र हैं। श्री अरविन्द ने भारतीयों के प्रति आस्था उत्पन्न की। उन्होंने आम जनता को राष्ट्रवाद के बारे में कहा कि राष्ट्रवाद ईश्वर तथा दैवी शक्ति का प्रतीक है। श्री अरविन्द ने राष्ट्रवाद को ईश्वरीय देन कहकर एक नवीन चेतना का संचार किया।

स्वराज्य राष्ट्र की आत्मा है :

श्री अरविन्द की मान्यता थी कि स्वराज्य के बिना राष्ट्र मृतक के समान है। स्वराज्य के अभाव में राष्ट्र की आत्मा मरती रहती है। स्वराज्य राज्य का आभूषण नहीं बल्कि नैतिक आवश्यकता है। उनका कहना था कि भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म ही स्वतंत्रता की आकांक्षा के साथ हुआ है। कोई भी राष्ट्र स्वराज्य के बिना अपनी उन्नति का निर्माण नहीं कर सकता। स्वराज्य व्यक्ति को उन्नति के पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। स्वराज्य में आशा और विश्वास के अंकुर पैदा होते हैं। स्वराज्य के अभाव में राष्ट्रीय जीवन गतिहीन बन जाता है।

भारतीय दर्शन के अनुसार स्वराज्य और राष्ट्र के प्रति प्रेम एक अभिन्न स्थिति का सूचक है। हिन्दू मान्यता के अनुसार स्वराज्य की स्थिति स्वर्ग से भी प्रिय है। इस अनुभूति का अनुभव उन्होंने राष्ट्र को कराया था। उन्होंने स्वराज्य को एक प्रेरणा के रूप में अनुभव किया था। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रवाद स्वराज्य की प्राप्ति का एक अस्त्र है। यह न केवल एक विश्वास पैदा करता है बल्कि मृतक राष्ट्र को जीवित करके अनुभूति पैदा करता है।

श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद किसी भी रूप में संकुचित राष्ट्रवाद नहीं था। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता और जागरण पर जोर दिया क्योंकि उनकी दृष्टि में भारत का कार्य विश्व का कार्य ईश्वरीय कार्य था। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रवाद मानव के सामाजिक तथा राजनीतिक विकास के लिए आवश्यक है। अन्ततोगत्वा एक विश्व संघ के द्वारा मानव की स्थापित होनी चाहिए और इस आदर्श की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक नींव का निर्माण मानव धर्म तथा आन्तरिक एकता की भावना के माध्यम से ही संभव है। श्री अरविन्द अपने राष्ट्रवाद को भारत की प्राचीन संस्कृति के आधार पर मानवतावादी रूप प्रदान किया।

श्री अरविन्द के राष्ट्रवाद को कुछ लोग संकीर्ण हिन्दू राष्ट्रवाद की संज्ञा देते हैं, किन्तु यह उचित नहीं है।

श्री अरविन्द की हिन्दू शब्द की अवधारणा बहुत उदात्त थी। उनका कहना था कि, हिन्दू धर्म शाश्वत है। यह सार्वभौमिक धर्म है। एक सीमित, संकीर्ण और साम्प्रदायिक धर्म तो अल्पकाल तक ही जीवित रह सकता है। यही एक ईश्वर के सामीप्य पर बल देता है। यह धर्म इस सत्य को स्वीकार करता है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। इस धर्म से हमें सत्य की अनुभूति होती है। अरविन्द भारत को शक्तिशाली तथा स्वतंत्र देखना चाहते थे।

इस प्रकार अरविन्द का राष्ट्रीयता का दृष्टिकोण अधिक उदार था। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद के धारणा के आधार पर उन्होंने देश के प्रति प्रेम और राष्ट्रवाद को एक धार्मिक रूप प्रदान किया। राष्ट्रवाद को ईश्वरीय बताकर अरविन्द ने भारतीय राष्ट्रवाद में नवीन चेतना भरी।

राष्ट्रवाद को ईश्वरीय आदेश बतलाते हुए अरविन्द ने देश के अनुयायियों के लिए नैतिक शिक्षा को आवश्यक बतलाया। उन्होंने लिखा है कि, "हमारे नेताओं तथा अनुयायियों दोनों के लिए आवश्यक है कि वे अधिक गहरी साधना करें अपनी आत्मा को उत्थान करें और विचारों तथा कार्यों में अधिक तेजवान और प्रचण्ड शक्ति का परिचय दें।"

—— x ——

Girijesh Singh, Asst. Professor
Dept: Political Science
R.N. College, Pandaul, Madhubani
Class - Deg I (H) Paper - II
Topics: Aurobindo Ghosh
Date: 14/05/2020